राजस्थान का इतिहास - एक परिचय

☛ **मत्स्य जनपद जिसका उल्लेख महाभारत में एक राज्य के रूप में हुआ। इस जनपद की राजधानी थी–**

(1) विराट नगर (2) रैढ़
(3) मध्यमिका (4) कुरूक्षेत्र (1)

व्याख्या–मत्स्य जनपद जिसका उल्लेख महाभारत में एक राज्य के रूप में हुआ वह–जयपुर, अलवर, डीग, कोटपुतली और भरतपुर तक विस्तृत था। इसकी राजधानी बैराठ (विराट नगर) थी।

☛ **पहाड़ियों की अधिकता के कारण उदयपुर के आस-पास का क्षेत्र कहलाता है–**

(1) गिरवा (2) ऊपरमाल
(3) भाखर (4) देशहरो (1)

व्याख्या–उदयपुर के आस-पास की तश्तरीनुमा पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में गिरवा कहा जाता है।

☛ **मानव इतिहास के कालों के संबंध में निम्न में से कौनसा युग्म सही सुमेलित है–**

(1) प्राक् युग – मानव लेखन कला से अपरिचित था।
(2) आद्य युग – लिखित साक्ष्य उपलब्ध है परन्तु अस्पष्ट।
(3) ऐतिहासिक युग – स्पष्ट और सुपठित लिखित साक्ष्य उपलब्ध है।
(4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या–मानव के इतिहास को तीन कालों में विभक्त किया जाता है–

1. **प्राक् युग**–ज्ञान के लिए कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है अर्थात् मानव लेखन कला से अपरिचित था।
   - यह युग सृष्टि के आरंभ से हड़प्पा सभ्यता के पूर्व तक था।
2. **आद्य युग**–आद्य युग जिसके लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध है किंतु या तो वे अस्पष्ट है अथवा उनकी लिपि को अभी पढ़ना संभव न हो।
   - यह युग हड़प्पा सभ्यता के काल से 600 ई.पू. तक रहा।
3. **ऐतिहासिक युग**–इस युग में स्पष्ट और सुपठित लिखित साक्ष्य उपलब्ध है।
   - यह युग 600 ई.पू. से वर्तमान तक जारी है।

☛ **जालोर से पूर्व पाषाणकाल के उपकरणों की खोज का श्रेय किसे दिया जाता है?**

(1) वीरेन्द्र नाथ मिश्र (2) सेटनकार
(3) बी. आल्चिन (4) डॉ. विजय कुमार (3)

व्याख्या–सेटनकार ने झालावाड़ से पूर्व पाषाण काल के उपकरणों की खोज की।

☛ **किराड़ोत व चीथवाड़ी नामक ताम्रकालीन संस्कृति के स्थल विकसित हुए–**

(1) राजसमंद (2) जयपुर
(3) नागौर (4) भरतपुर (2)

व्याख्या–जोधपुरा से लौहयुगीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं।

☛ **निम्न में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है–**

सभ्यता स्थल		स्थान
(1) कुराड़ा	–	नागौर
(2) साबणिया व पूगल	–	बीकानेर
(3) एलाना	–	जयपुर
(4) मलाह	–	भरतपुर (3)

व्याख्या–एलाना नामक स्थल जालोर में है।

☛ **निम्न में से किस स्थल से ताम्रकालीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त नहीं हुए?**

(1) गणेश्वर सीकर (2) साबणिया (बीकानेर)
(3) नन्दलालपुरा (जयपुर) (4) नोह (भरतपुर) (4)

व्याख्या–राजस्थान की ताम्रकालीन संस्कृति के प्राचीन स्थलों में गणेश्वर (सीकर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), गिलूण्ड (राजसमंद), आहड़ व झाड़ौल (उदयपुर), पिण्ड–पाडलियॉ (चित्तौड़), कुराड़ा (नागौर), साबणिया व पूगल (बीकानेर) नन्दलालपुरा, किराड़ोत व चीथवाड़ी (जयपुर), एलाना (जालोर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), कोल माहोली (सवाईमाधोपुर) मलाह (भरतपुर) आदि प्रमुख है।

☛ **लौहे को गलाने की भट्टियों के अवशेष निम्न में से किस स्थान से प्राप्त हुए?**

(1) मलाह व जोधपुरा से (2) जोधपुरा व सुनारी से
(3) कुराड़ा व नोह से (4) गिलूण्ड व सुनारी से (2)

व्याख्या–जोधपुरा (जयपुर) व सुनारी (झुँझुनूँ) से लौहे को गलाने की भट्टियां और अस्त्र-शस्त्र तथा उपकरण बनाने के कारखानों के अवशेष मिले हैं।

- 19 नये जिले बनने के बाद गणेश्वर व सुनारी सभ्यता नीम का थाना जिले में चले गये है।

☛ **राजस्थान में स्लेटी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति के अवशेष कहाँ से प्राप्त हुए–**

(1) विराटनगर व जोधपुरा (जयपुर)
(2) सुनारी (झुँझुनूँ)
(3) नोह (भरतपुर)
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–लौह युग के पश्चात राजस्थान में स्लेटी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति का उदय हुआ। इस संस्कृति के अवशेष विराटनगर व जोधपुरा (जयपुर), सुनारी, नोह आदि स्थानों से मिले हैं। इस संस्कृति का उदय लगभग 600 ई.पु. में हुआ।

☛ **कालीबंगा राजस्थान के किस जिले में स्थित है?**

(1) सीकर (2) जयपुर
(3) श्रीगंगानगर (4) हनुमानगढ़ (4)

व्याख्या–कालीबंगा शब्द सिंधी (पंजाबी) भाषा का है। जिसका शाब्दिक अर्थ काले रंग की चूडियाँ है।

- कालीबंगा शब्द में 'बंगा' शब्द पंजाबी भाषा का है। जिसका अर्थ है चूड़ियाँ/चूड़ी।

☛ **कालीबंगा के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन असत्य है–**

(1) कालीबंगा सभ्यता का उत्खनन 1961-62 ई. में बी.बी. लाल व बी.के. थापर के निर्देशन में किया गया।
(2) कालीबंगा सभ्यता का उत्खनन पाँच स्तरों में किया गया।
(3) कालीबंगा के उत्खनन से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों का रंग लाल था जिन पर काली व सफेद रंग की रेखाएँ खींची गई है।
(4) कालीबंगा सभ्यता से ताँबे के उपकरण मिले। (4)

व्याख्या–कालीबंगा सभ्यता से प्राक् हड़प्पाकालीन सभ्यता के अवशेष मिले–

- कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त प्राक् हड़प्पाकालीन मकान में कच्ची ईंटों के प्रयोग के कारण इसे 'दीन-हीन बस्ती' व 'गरीबों की बस्ती' कहा गया।
- कालीबंगा से सामूहिक तंदूर के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा के द. पू. दिशा में जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

क्र.सं.	पुरातात्विक स्थल	जिला
1.	कालीबंगा	हनुमानगढ़
2.	बैराठ	जयपुर
3.	बागोर	भीलवाड़ा
4.	नलियासर	सांभर (जयपुर)
5.	तिलवाड़ा	बाड़मेर
6.	आहड़	उदयपुर
7.	नगरी	चित्तौड़गढ़
8.	गणेश्वर	नीम का थाना (सीकर)
9.	जोधपुरा	जयपुर
10.	बालाथल	उदयपुर
11.	सुनारी	खेतड़ी (झुंझुनूं)
12.	रंगमहल	हनुमानगढ़
13.	रैढ़, नगर	टोंक
14.	गिलूण्ड	राजसमंद
15.	नोह	भरतपुर

☛ **कालीबंगा सभ्यता की खोज किसने की?**

(1) अक्षयकीर्ति व्यास (2) डॉ. वी.एन. मिश्र
(3) अमलानन्द घोष (4) बी.के. थापर (3)

व्याख्या–कालीबंगा सभ्यता की खोज सर्वप्रथम अमलानन्द घोष ने 1952 ई. में की। कालीबंगा सभ्यता आज से लगभग 6 हजार वर्ष प्राचीन मानी जाती है।

☛ **कालीबंगा सभ्यता के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन सत्य है–**

(1) कालीबंगा सभ्यता से एक ही खेत में एक साथ दो फसलें उगाने के साक्ष्य प्राप्त हुए।
(2) कालीबंगा से कलश शवाधान के साक्ष्य भी मिले हैं।
(3) कालीबंगा सभ्यता से बेलनाकार मुहरों के अवशेष प्राप्त हुए थे।
(4) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है। (4)

व्याख्या–कालीबंगा सभ्यता से मिश्रित फसल (गेहूँ व जौ) के अवशेष प्राप्त हुए।

- कालीबंगा सभ्यता से खिलौना बैलगाड़ी, हवनकुण्ड, लकड़ी की नाली व बेलनाकार मुहर के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा सभ्यता से अण्डाकार (कब्र जिसे 'चिरायु कब्र' नाम दिया गया) के अवशेष प्राप्त हुए।
- कालीबंगा से सात हवन कुण्ड के साक्ष्य भी मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त एक मुद्रा पर व्याघ्र व एक पर महिला कुमार देवी का चित्र अंकित था।

☛ पुरातात्विक स्थल व जिला में निम्न में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है–

(1) कालीबंगा सभ्यता – हनुमानगढ़
(2) आहड़ सभ्यता – उदयपुर
(3) गिलूण्ड सभ्यता – सवाईमाधोपुर
(4) बागोर सभ्यता – भीलवाड़ा (3)

व्याख्या–गिलूण्ड सभ्यता राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित है।

☛ निम्न में से कौनसे स्थल को 'धूलकोट' कहा जाता है?

(1) कालीबंगा (2) बागोर
(3) आहड़ (4) गिलूण्ड (3)

व्याख्या–आहड़ सभ्यता एक मिट्टी के टीले के नीचे दबी हुई प्राप्त हुई थी जिसे धूलकोट (धूल यानि मिट्टी का टीला) कहते हैं।

☛ निम्न में से कौनसे सभ्यता स्थल को ताम्रवती नगरी के नाम से जाना जाता है?

(1) बैराठ (2) कालीबंगा
(3) गणेश्वर (4) आहड़ (4)

व्याख्या–आहड़ में ताँबे के औजारों एवं उपकरणों के अत्यधिक प्रयोग के कारण इस सभ्यता स्थल को ताम्रवती नगरी के नाम से जाना जाता है।

नोट–*गणेश्वर सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहा जाता है।*

☛ 1967 ई. से 1970 ई. तक बागोर सभ्यता का उत्खनन किसके निर्देशन में किया गया?

(1) डॉ. वी.एस. शिन्दे (2) डॉ. वी.एन. मिश्र
(3) एच.डी. सांकलिया (4) रतनचन्द्र अग्रवाल (2)

व्याख्या–बागोर सभ्यता के उत्खनन के दौरान यहाँ प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो चार से पाँच हजार ई.पू. के माने जाते हैं।

☛ आहड़ सभ्यता के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन असत्य है–

(1) आहड़ सभ्यता के लोग मृतकों को गहनों व आभूषणों के साथ दफनाते थे।
(2) आहड़ सभ्यता के लोग काले व लाल रंग के मृद-पात्रों का प्रयोग करते थे।
(3) आहड़ सभ्यता से पत्थर के बाँध के साक्ष्य भी प्राप्त हुए।
(4) आहड़ के उत्खनन से रंगाई-छपाई के ठप्पे प्राप्त हुए। (3)

व्याख्या–पत्थर के बाँध के साक्ष्य गणेश्वर सभ्यता से प्राप्त हुए।

- आहड़ सभ्यता के लोग अपने मृतकों को गहनों व आभूषणों के साथ दफनाते थे, जो इनके मृत्यु के बाद भी जीवन की अवधारणा का समर्थक होने का प्रमाण है।
- आहड़ के उत्खनन से सर्वाधिक मिट्टी के बर्तन मिले हैं, जो आहड़ को लाल-काले मिट्टी के बर्तन वाली संस्कृति का प्रमुख केन्द्र सिद्ध करते हैं।
- आहड़ सभ्यता से अनाज रखने के मृदभाण्ड मिले, जिन्हें गोरे/कोठे कहा जाता था।
- आहड़ सभ्यता से ताँबा गलाने की भट्टियां व आटा पीसने की चक्की के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- आहड़वासी गंदे पानी के निकास के लिए जो उपकरण काम में लेते थे वो चक्रकूप कहलाता था।

☛ गिलुण्ड सभ्यता किस नदी के तट पर स्थित है?

(1) आहड़ नदी (2) बनास नदी
(3) कोठारी नदी (4) कांतली नदी (2)

व्याख्या–राजसमंद जिले के गिलुण्ड कस्बे में बनास नदी के तट पर दो टीलों के उत्खनन के फलस्वरूप आहड़ संस्कृति से जुड़ी गिलुण्ड सभ्यता प्रकाश में आई। जिसे बनास संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है।

☛ गिलुण्ड सभ्यता के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए व नीचे दिये गये कूटों में से सही कूट का चयन करें–

A. गिलुण्ड के उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं।
B. गिलुण्ड सभ्यता के मकानों में पक्की ईंटों का उपयोग किया गया था।
C. गिलुण्ड के उत्खनन में मिट्टी के खिलौने, पत्थर की गोलियां एवं हाथीदाँत की चूड़ियों के अवशेष मिले।
D. गिलुण्ड से पाँच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

कूट– (1) केवल A व D (2) केवल B व D
(3) A, B व C (4) A, B, C व D (4)

व्याख्या–गिलुण्ड के उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं, जिसका समय 1900–1700 ई. पू. निर्धारित किया गया है।

- गिलुण्ड से पाँच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले हैं–सादे, काले, पॉलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित मृदभाण्ड।

परीक्षा दृष्टि

★ आहड़ सभ्यता से प्राप्त उपकरण मुख्यत: निर्मित है– – ताँबे से
★ गणेश्वर सभ्यता किस काल से संबंधित है– – ताम्र पाषाण युग
★ बौद्ध मंदिर के स्मारक किस स्थान पर स्थित हैं– बैराठ
★ मौर्य सभ्यता के प्रमाण किस स्थान पर उपलब्ध हैं– – जयपुर (बैराठ)
★ राजसमंद स्थित किस स्थान से हड़प्पा से भी पुरानी सभ्यता के अवशेष मिले हैं– – गिलुण्ड
★ राजस्थान सभ्यता के किस स्थल पर सबसे प्रथम बार हल से जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए– – कालीबंगा
★ आहड़ संस्कृति के लोग किस धातु से परिचित नहीं थे– – लोहा
★ राजस्थान में किस स्थान पर सैन्धव कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं– – कालीबंगा
★ किस जिले में आहड़ संस्कृति के अवशेष मिले हैं– – उदयपुर
★ किस सैन्धव स्थल से 'अग्निकुण्ड' के साक्ष्य मिले हैं – कालीबंगा
★ राजस्थान की बौद्ध संस्कृति के अवशेष कहाँ मिले हैं – विराटनगर
★ राजस्थान के किस जिले में पूर्व हड़प्पा सभ्यता के व्यापक अवशेष पाए गए हैं– – हनुमानगढ़
★ प्राचीन गणेश्वर सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं– नीमकाथाना से
★ बीजक की पहाड़ी स्थित है– – विराटनगर में
★ किसने 1950-51 में कालीबंगा की पहचान की– – ए.घोष ने
★ 'बनास संस्कृति' किस स्थल से संबंधित है – आहड़ से
★ किस प्राचीन सभ्यता केन्द्र को ताम्रवती नाम से भी जाना जाता है – आहड़
★ राजस्थान के किस वर्तमान जिले में गणेश्वर स्थल स्थित है– सीकर
★ बैराठ प्राचीन काल में राजधानी थी– – मत्स्य राज्य की
★ आहड़ सभ्यता स्थित है– – बनास नदी पर
★ प्रो. एच.डी. सांकलिया के निर्देशन में जिस सभ्यता स्थल का उत्खनन हुआ, वह है– – आहड़

☛ **गणेश्वर सभ्यता का उत्खनन कार्य किसके निर्देशन में किया गया?**

(1) कैलाश नाथ दीक्षित (2) रतनचन्द्र अग्रवाल
(3) नीलरत्न बनर्जी (4) प्रो. वी.एस. मिश्र (2)

व्याख्या–गणेश्वर सभ्यता की खोज 1972 ई. में रतनचन्द्र अग्रवाल ने की।

- रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में हुए उत्खनन से यहाँ 2800 ई.पू. की सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

☛ **बागोर सभ्यता के संबंध में कौनसा कथन असत्य है–**

(1) बागोर से मध्य पाषाणकालीन लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ प्राप्त हुई है।
(2) बागोर से कृषि व पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
(3) यहाँ से ताँबे के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–बागोर से बड़ी संख्या में लघु पाषाण उपकरण मिले हैं, जो इस सभ्यता के निवासियों के आखेटक होने को प्रमाणित करते हैं।

- यहाँ से प्राप्त ताम्र उपकरणों में 10.5 सेमी. लम्बी छेद वाली सुई व एक कुन्ताग्र प्रमुख है।
- बागोर से प्राप्त अवशेषों के आधार पर यहाँ मानव सभ्यता के तीन स्तर मिलते हैं।
- बागोर सभ्यता को 'आदिम संस्कृति का संग्रहालय' कहा जाता है।
- बागोर मध्य पाषाण कालीन सभ्यता का स्थल और लघु पाषाण उपकरण का प्रमुख केन्द्र था।
- बागोर से उत्खनन किये गये स्थान को 'महासतियों का टीला' कहा जाता है।

☛ **गणेश्वर सभ्यता किस प्रकार की थी?**

(1) कांस्ययुगीन (2) लौहयुगीन
(3) ताम्र युगीन (4) इनमें से कोई नहीं (3)

व्याख्या–गणेश्वर सभ्यता से अत्यधिक मात्रा में ताँबे के आयुध व उपकरण मिले हैं जो इसे ताम्रयुगीन सभ्यताओं में प्राचीनतम सिद्ध करती है। यहाँ से प्राप्त ताँबे के उपकरणों व पात्रों में 99 प्रतिशत ताँबा है, जो इस क्षेत्र में ताँबे की प्रचुर प्राप्ति का प्रमाण है।

☛ **राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्र युगीन सभ्यताओं की जननी के नाम से जाना जाता है–**

(1) आहड़ सभ्यता को (2) गणेश्वर सभ्यता
(3) कालीबंगा सभ्यता (4) नोह सभ्यता (2)

व्याख्या–गणेश्वर को भारत की ताम्र सभ्यताओं की जननी माना जाता है। यहाँ से ताँबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को भेजा जाता था।

- गणेश्वर सभ्यता को 'पुरातत्व का पुष्कर' कहते हैं।
- गणेश्वर सभ्यता से ताँबे के बाणाग्र व मछली पकड़ने का कांटा प्राप्त हुआ।
- गणेश्वर सभ्यता राजस्थान का एकमात्र सभ्यता स्थल है जहाँ से पत्थर के बाँध मिले।

परीक्षा दृष्टि

★ 1657 ई. में मुगल उत्तराधिकारी संघर्ष में मेवाड़ के किस महाराणा से औरंगजेब ने सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया– **राजसिंह**

★ राणा सांगा ने किस युद्ध में बाबर की सेना को हराया – **बयाना**

★ उदयसिंह के साथ चित्तौड़ छोड़ने के पश्चात् पन्ना को किस स्थान पर आश्रय प्राप्त हो सका– – **कुम्भलगढ़**

★ 1679 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब तथा राणा राजसिंह के मध्य उत्पन्न कटुता का प्रमुख कारण था – **राणा राजसिंह द्वारा औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति का प्रतिरोध करना**

★ चित्तौड़ का राणा रतनसिंह था – – **गुहिल वंशीय**

★ राणा सांगा व बाबर के मध्य निर्णायक युद्ध हुआ – **1527 ई. में**

★ अकबर द्वारा महाराणा प्रताप से मैत्री स्थापित करने के लिए गठित तृतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया – **भगवंतदास ने**

★ महाराणा राजसिंह का शासनकाल था – **1652 ई. से 1680 ई.**

★ वह कौनसा मेवाड़ का मशहूर शासक था जिसने अचलगढ़ के किले की मरम्मत करवाई थी– – **महाराणा कुम्भा**

★ हल्दीघाटी का युद्ध कब हुआ – **1576 ई. में**

★ राजस्थान का कौनसा शासक मुगलों के सामने नहीं झुका– – **महाराणा प्रताप**

★ राजस्थान के इतिहास में सर्वाधिक निर्णायक युद्ध था– – **खानवा का युद्ध**

★ महाराणा प्रताप के तीन सूरमा सरदारों में एक मुसलमान था, उसका नाम था– – **हाकिम खाँ सूर**

★ 1567-68 ई. में चित्तौड़ के मुगल घेरे के दौरान दो राजपूत सामंतों ने दुर्ग की रक्षा करते हुए प्राण त्याग दिये उनके नाम थे – **जयमल व फत्ता**

☛ **जालोर में स्थित भीनमाल सभ्यता का उत्खनन किसने करवाया?**

(1) आर.सी. अग्रवाल (2) प्रो. वी.एन. मिश्र
(3) डॉ. वी.एस. शिन्दे (4) एच.डी. सांकलिया (1)

व्याख्या–जालोर में स्थित भीनमाल सभ्यता का उत्खनन आर.सी. अग्रवाल ने करवाया था। यहाँ से एक रोमन ऐम्फोरा (सुरापात्र) व एक यूनानी सुराही मिली है, जो इसके विदेशी व्यापार का केन्द्र होने की पुष्टि करता है।

☛ **भीनमाल का प्राचीन नाम क्या था?**

(1) रूमा (2) श्रीमाल
(3) उत्तमाद्री (4) ब्रजनगर (2)

व्याख्या– रूमा–सांभर झील के आस पास का क्षेत्र
उत्तमाद्री–बिजौलिया (विजयावल्ली)
ब्रजनगर–झालरापाटन

☛ **नोह सभ्यता स्थल राजस्थान के किस जिले में है?**

(1) जयपुर (2) भरतपुर
(3) भीलवाड़ा (4) गंगानगर (2)

व्याख्या–नोह सभ्यता भरतपुर में रूपारेल नदी के किनारे अवस्थित है। इस सभ्यता का उत्खनन श्री आर.सी. अग्रवाल व डॉ. डेविडसन के नेतृत्व में 1963-67 ई. के मध्य किया गया।

☛ **बालाथल एक ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता है जिसका उत्खनन प्रो. वी.एन. मिश्र के निर्देशन में किया गया। यह सभ्यता स्थल राजस्थान के किस जिले में है?**

(1) बाड़मेर (2) चित्तौड़गढ़
(3) उदयपुर (4) भीलवाड़ा (3)

व्याख्या–बालाथल सभ्यता की खोज डॉ. वी.एन. मिश्र ने 1962-63 ई. में की थी।

☛ **राजस्थान में वैदिक सभ्यता के अवशेष कहाँ से प्राप्त हुए?**

(1) अनूपगढ़ (2) तरखान वाला डेरा
(3) चक-64 (4) उपर्युक्त सभी जगह से (4)

व्याख्या–वैदिक सभ्यता के बारे में जानने का प्रमुख स्रोत वेद है। वेद चार हैं–(1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद

☛ **बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय में कितने महाजनपदों का उल्लेख मिलता है?**

(1) 10 (2) 16
(3) 15 (4) 11 (2)

व्याख्या–बौद्ध साहित्य में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है इनमें से मत्स्य जनपद राजस्थान में ही स्थित है। राजस्थान के अनेक भाग कुरु, शूरसेन और अवन्ती महाजनपदों के अंतर्गत आते थे।

☛ **मत्स्य जन का उल्लेख मिलता है–**

(1) शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में
(2) कौषीतकी उपनिषद में
(3) शतपथ ब्राह्मण व कौषीतकी उपनिषद दोनों में
(4) गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ में (3)

व्याख्या–आर्य 'जन' के रूप में मत्स्य जाति का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है।

- शतपथ ब्राह्मण व कौषीतकी उपनिषद में मत्स्य जन का उल्लेख मिलता है।
- मत्स्य जनपद में आधुनिक जयपुर, डीग, कोटपुतली, अलवर, धौलपुर, करौली व भरतपुर के कुछ भाग सम्मिलित थे।

• महाभारत काल में मत्स्य जनपद का शासक विराट था। जिसने जयपुर से 85 किमी. दूर विराटनगर (बैराठ) बसाकर उसे मत्स्य जनपद की राजधानी बनाया।

☛ **"वे (राजपूत) हर्ष की मृत्यु के बाद से उत्तरी भारत पर मुसलमानों के आधिपत्य तक इतने प्रभावशाली हो गये थे कि सातवीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी की समाप्ति तक के समय को राजपूत युग कहा जा सकता है।" यह कथन किसका है?**

(1) डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
(2) सी.वी. वैद्य
(3) स्मिथ
(4) चन्द्रबरदाई (3)

व्याख्या–डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने राजपूतों की उत्पत्ति के बारे में लिखा है कि "राजपूत शब्द का प्रयोग नया नहीं है। प्राचीन काल के ग्रंथों में इसका व्यापक प्रयोग मिलता है। 'अर्थशास्त्र', कालिदास के नाटकों व बाणभट्ट के 'हर्षचरित' तथा 'कादम्बरी' में इस शब्द का प्रयोग किया गया है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी जो हर्षवर्धन के समय आया था, राजाओं को कहीं क्षत्रीय और कहीं राजपूत लिखा है।"

☛ **'हर्षचरित' व 'कादम्बरी' किसकी रचनाएँ है?**

(1) चाणक्य (2) बाणभट्ट
(3) डॉ. गोपीनाथ शर्मा (4) डॉ. मोतीलाल मेनारिया (2)

☛ **राजपूतों को भारतीय आर्यों के क्षत्रीय वर्ण की संतान किसने बताया?**

(1) सी.वी. वैद्य व डॉ. जी.एच. ओझा
(2) डॉ. जी.एच. ओझा व डॉ. भण्डारकर
(3) सी.वी. वैद्य व कर्नल जेम्स टॉड
(4) सी.वी. वैद्य व डॉ. भण्डारकर (1)

व्याख्या–डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा व सी.वी. वैद्य राजपूतों को भारतीय आर्यों के क्षत्रीय वर्ण (राजन्य वर्ग) की संतान मानते हैं। उनके कथनानुसार राजपूत प्राचीन क्षत्रियों की तरह अश्व तथा अस्त्र की पूजा करते हैं। प्राचीन आर्यों की भाँति यज्ञ और बलि में भी उनका विश्वास रहा है। इसी से यह प्रमाणित होता है कि वे आर्यों की संतान है।

☛ **सन् 1800 ई. में वर्तमान राजस्थान के लिए किस विद्वान ने राजपूताना शब्द का प्रयोग किया?**

(1) जार्ज थॉमस (2) कर्नल जेम्स टॉड
(3) वी.ए. स्मिथ (4) विलियम फ्रेंकलिन (1)

व्याख्या–जार्ज थॉमस ने वर्तमान राजस्थान के लिए राजपूताना शब्द का प्रयोग किया था।

• जार्ज थॉमस आयरलैण्ड का निवासी था जो मराठा शासक दौलत राव सिंधिया का अंग्रेजी कमांडर था।
• विलियम फ्रेंकलिन द्वारा लिखित मिलिट्री मेमोरीज ऑफ मि. जार्ज थॉमस पुस्तक में थॉमस द्वारा राजपूताना शब्द के प्रयोग का सर्वप्रथम लिखित उल्लेख मिलता है। इस पुस्तक का प्रकाशन लार्ड वेलेजली ने करवाया था।

☛ **"एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तक किसने लिखी?**

(1) थॉमस (2) कर्नल जेम्स टॉड
(3) अबुल फजल (4) अल बरूनी (2)

व्याख्या–एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान नामक पुस्तक के लेखक कर्नल जेम्स टॉड थे।

• इस पुस्तक का दूसरा नाम "दी सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है। यह दो भागों में प्रकाशित हुई है। इसके दूसरे भाग प्रकाशन टॉड के दोस्त जेम्स क्रूक ने करवाया था। इस पुस्तक में प्रदेश का नाम रायथान या राजस्थान रखा।

☛ **बीकानेर व नागौर के आस-पास का क्षेत्र प्राचीन काल में किस नाम से जाना जाता है?**

(1) मरुवार (2) शूरसेन
(3) जांगल देश (4) मत्स्य (3)

व्याख्या–जोधपुर का क्षेत्र पहले मरु बाद में मरुवार कहलाता था।

• बीकानेर व नागौर के आस-पास को क्षेत्र जांगल देश कहलाती था।
• भरतपुर, धौलपुर व करौली का अधिकांश भाग शूरसेन कहलाता था।
• जयपुर-अलवर व भरतपुर का क्षेत्र महाभारत काल में मत्स्य क्षेत्र कहलाता था।

☛ **वर्तमान राजस्थान प्रदेश का नाम राजस्थान कब रखा गया?**

(1) 15 मई, 1929 ई. (2) 18 मार्च, 1948 ई.
(3) 30 मार्च, 1949 ई. (4) 1 नवम्बर, 1956 ई. (3)

☛ **जयपुर व इन्द्रगढ़ में सर्वप्रथम पत्थर से बनी पूर्व पाषाण कालीन हस्त कुठार (hand axe) की खोज किसने की?**

(1) दयानन्द सरस्वती (2) जॉन मार्शल
(3) अमलानंद घोष (4) सी.ए. हैकेट (4)

व्याख्या–जयपुर व इन्द्रगढ़ में सर्वप्रथम पत्थर से बनी हस्त कुठार की खोज सी.ए. हैकेट ने सन 1870 ई. में की। यह कुठार वर्तमान में भारतीय संग्रहालय कोलकाता में है।

परीक्षा दृष्टि

★ महाराजा जसवंतसिंह के राज्यारोहण के समय कितना मनसब प्रदान किया गया **–4000 जात तथा 4000 सवार**

★ जोधपुर और जैसलमेर के शासकों के मध्य परगना पोकरण के अधिकार को लेकर जो विवाद था उसका निपटारा किस शासक के काल में किया गया– **– शाहजहाँ**

★ मारवाड़ के किस शासक ने अकबर की अधीनता स्वीकार की– **– मोटा राजा उदयसिंह**

★ धरमत का युद्ध किन दो शासकों के बीच लड़ा गया– **– जसवंतसिंह व औरंगजेब**

★ दुर्गादास राठौड़ ने औरंगजेब से किसको बचाया– **– महाराजा अजीतसिंह**

★ राठौड़ शासक जो 52 युद्धों के नायक और 58 परगनों के रूप में प्रतिष्ठित माना गया? **– राव मालदेव**

★ बीकानेर के किस शासक ने मुगलों की जीवन पर्यन्त सेवा की– **– महाराजा रायसिंह**

★ शेरशाह ने किस शासक के व्यवहार से रूष्ट होकर मारवाड़ पर आक्रमण किया– **– मालदेव**

★ बीकानेर के किस शासक ने सुमेल गिरी के युद्ध में शेरशाह की सहायता की थी? **– राव कल्याणमल ने**

☛ **निम्न में से कौनसी विशेषता आहड़ सभ्यता से संबंधित है–**

(1) यह सभ्यता एक टीले के नीचे दबी होने के कारण इसे धुलकोट कहते हैं।

(2) लोग मकान बनाने में धूप में बनाई गई ईंटों व पत्थरों का प्रयोग करते थे।

(3) आहड़ के लोग अपने मृतकों को गहनों व आभूषणों के साथ दफनाते थे।

(4) उपयुक्त सभी (4)ठ

व्याख्या–आहड़ का दूसरा नाम ताम्रवती नगरी। लाल काले रंग का मृदभांड मिले।

☛ **बागोर की सभ्यता (बागोर सभ्यता) की खोज किस नदी के तट पर की गई?**

(1) कोठारी नदी (2) बनास नदी

(3) घग्घर नदी (4) चम्बल नदी (1)

व्याख्या–जिला भीलवाड़ा,

- उत्तखनन कर्त्ता–डॉ. बीएन मिश्र (1967–1970 ई.) कृषि व पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए। छेद वाली सुई मिली।

☛ **गणेश्वर सभ्यता किस जिले में स्थित है–**

(1) जयपुर में (2) चूरू में

(3) सीकर में (4) हनुमानगढ़ में (3)

व्याख्या–ताम्रयुगीन सभ्यता,

- कातली नदी के उद्‌गम पर
- उत्खनन कर्ता–रतनचंद्र अग्रवाल
- गणेश्वर भारत की ताम्र सभ्यताओं की जननी मानी जाती है।

☛ **सुमेलित नहीं है?**

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
(1) मरू	जयपुर
(2) शूरसेन	धौलपुर, करौली, भरतपुर
(3) जांगल प्रदेश	बीकानेर
(4) मारवाड़/मरूवार	जोधपुर (1)

☛ **बीजक डूँगरी, भीम डूँगरी, महादेवजी की डूँगरी कौनसी सभ्यता में पायी जाती है–**

(1) आहड़ सभ्यता में (2) बैराठ सभ्यता में

(3) कालीबंगा सभ्यता में (4) रैढ़ सभ्यता में (2)

व्याख्या– दयाराम साहनी,
जिला–जयपुर
अशोक का भाब्रू शिलालेख भी प्राप्त हुआ।

☛ **प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा के मध्य का भू-भाग कहलाता है–**

(1) छप्पन का मैदान (2) कांठल

(3) गिरवा (4) देशहारो (1)

व्याख्या–छप्पन का मैदान-प्रतापगढ़ व बाँसवाड़ा में माही नदी के आसपास 56 गाँवों का समूह छप्पन का मैदान कहलाता है।

☛ **मानव के संपूर्ण इतिहास को कितने भागों में विभक्त किया है?**

(1) 4 (2) 3

(3) 5 (4) 8 (2)

व्याख्या– (1) प्रागैतिहासिक (प्राग ऐतिहासिक)
(2) आद्य ऐतिहासिक युग
(3) ऐतिहासिक युग

☛ **निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है?**

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
(1) माण्ड़	जैसलमेर
(2) हाड़ौती	कोटा, बूँदी
(3) वागड़	नागौर, सीकर, झुंझुनूँ
(4) शेखावाटी	सीकर, झुंझुनूँ, चूरू (3)

व्याख्या– वागड़-डूँगरपुर, बाँसवाड़ा।
बांगड़-नागौर, सीकर, झुंझुनूँ

- निम्नलिखित में लौह युगीन सभ्यता है?
  (1) नोह–भरतपुर, जोधपुरा, जयपुर
  (2) सुनारी (झुंझुनूं)
  (3) रैढ़ (टोंक)
  (4) उपर्युक्त सभी (4)
- लोह सामग्री की प्रचुरता के कारण राजस्थान के कौनसे स्थल को "टाटानगर" की संज्ञा दी गई?
  (1) नोह (2) जोधपुरा
  (3) रैढ़ (4) सुनारी (3)
- कालीबंगा सभ्यता किस नदी के किनारे स्थित है?
  (1) दृषद्वती और सरस्वती (घग्घर)
  (2) बनास नदी
  (3) कांतली नदी के
  (4) बाणगंगा नदी के (1)

व्याख्या– जिला हनुमानगढ़
खोज–अमलानंद घोष (1952 ई.)
उत्खनन–बी.वी. लाल व बी.के. थापर (1961, 1962)

- कालीबंगा का उत्खनन कितने स्तर में किया गया है?
  (1) 4 (2) 5
  (3) 8 (4) 11 (2)
- निम्न में से कौनसी विशेषता का संबंध कालीबंगा सभ्यता से है?
  (1) सभ्यता की खुदाई के दौरान काली चूड़ियाँ प्राप्त हुई।
  (2) कालीबंगा की सभ्यता को दो भागों में बांटा गया।
  (3) मकान बनाने में मिट्टी की ईंटों को धूप में पकाकर प्रयुक्त किया जाता था।
  (4) उपर्युक्त सभी (4)
- निम्न में से कौनसी विशेषता कालीबंगा से संबंधित है?
  (1) जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।
  (2) लोग एक ही खेत में दो फसलें उगाते थे व बर्तनों का रंग लाल था।
  (3) एक बच्चे के कंकाल की खोपड़ी में छः (छिद्र) मिले हैं जिसमें मस्तिष्क बीमारी के कारण ईलाज का प्रमाण माना जाता है।
  (4) उपर्युक्त सभी (4)
- आहड़ सभ्यता की खोज किसने की?
  (1) अमलानंद घोष (2) अक्षय कीर्ति व्यास
  (3) बी.के. थापर (4) दयाराम साहनी (2)

व्याख्या– 1953 ई., नदी–आहड़
उत्खनन कर्ता–रतनचंद्र अग्रवाल, एच.डी. सांकलिया

- 1957-1958 ई. में बी.बी. लाल के निर्देश में किस सभ्यता का उत्खनन किया गया?
  (1) कालीबंगा सभ्यता (2) गिलुंड सभ्यता
  (3) आहड़ सभ्यता (4) बागोर सभ्यता (2)
- कौनसी सभ्यता से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों को "कपिषवर्णी मृदपात्र" कहते हैं?
  (1) गणेश्वर सभ्यता (2) बालाथल सभ्यता
  (3) आहड़ सभ्यता (4) रैड़ सभ्यता (1)
- दयाराम साहनी, नील रत्न बनर्जी, कैलाशनाथ दीक्षित जैसे विद्वानों का संबंध कौनसी सभ्यता से है?
  (1) आहड़ सभ्यता (2) कालीबंगा सभ्यता से
  (3) बैराठ सभ्यता से (4) गणेश्वर सभ्यता से (3)

व्याख्या–इस सभ्यता में मौर्य काल से संबंधित अवशेष प्राप्त हुए।

- असत्य कथन को पहचानिए–

सभ्यता	जिला
(1) ओझियाना	भीलवाड़ा
(2) नगर	टोंक
(3) जोधपुरा	जोधपुर
(4) ईसवाल	उदयपुर (3)

- अग्निकुण्ड सिद्धांत से राजपूतों की उत्पत्ति हुई यह किसने कहा?
  (1) जेम्स टॉड (2) गोपीनाथ शर्मा
  (3) चन्द्रबरदाई (4) डी.आर. मन्डाकर (3)

व्याख्या–चन्दबरदायी ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ पृथ्वीराज रासो में राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से बताई। उसने लिखा है कि आबू पर्वत पर निवास करने वाले विश्वामित्र, गौतम, अगस्त्य तथा अन्य ऋषि धार्मिक अनुष्ठान करते थे। इन अनुष्ठानों को राक्षस माँस, हड्डी और मल-मूत्र डालकर अपवित्र कर देते थे। वशिष्ठ मुनि ने इनसे निपटने के लिए तीन योद्धा उत्पन्न किये, जो परमार, चालुक्य और प्रतिहार कहलाये। किन्तु जब यह तीनों भी रक्षा करने में असमर्थ सिद्ध हुए तो वशिष्ठ ने चौथा योद्धा उत्पन्न किया जो प्रथम तीन से ज्यादा ताकतवर और हथियार से सुसज्जित था, जिसका नाम चौहान रखा गया। चन्दबरदाई के अनुसार इस तरह राजपूतों की उत्पत्ति मुनि वशिष्ठ द्वारा अग्निकुण्ड (यज्ञ कुण्ड) से की गई।

- प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान इनकी क्रमशः उत्पत्ति का सिद्धांत कौनसी पुस्तक में मिलता है–
  (1) वीर विनोद में (2) पृथ्वीराज रासो में
  (3) पृथ्वीराज विजय में (4) पद्मावत में (1)

☛ **चन्दरबरदायी किसके दरबारी कवि थे?**

(1) पृथ्वीराज तृतीय (2) राणा सांगा
(3) महाराणा कुंभा (4) राव चुंडा (1)

व्याख्या–चन्दरबरदाई का जन्म लाहौर में 1148 ई. में हुआ। यह अजमेर के शासक पृथ्वीराज तृतीय का दरबारी विद्वान था।

☛ **किसने गुहिल राजपूतों की उत्पत्ति नागर ब्राह्मणों से बतलाई?**

(1) डॉ. गोपीनाथ शर्मा (2) जयदेव
(3) डॉ. डी.आर. भण्डारकर (4) डॉ. दशरथ शर्मा (3)

व्याख्या–सर्वप्रथम डॉ. डी.आर. भण्डारकर ने गुहिल राजपूतों की उत्पत्ति नागर ब्राह्मणों से बतलाई।

- डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने भी मेवाड़ के गुहिलोतों को नागर जाति के ब्राह्मण गुहेदत का वंशज बताया।
- मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने जयदेव के गीत-गोविन्द की टीका में यह स्वीकार किया कि गुहिलोत नागर ब्राह्मण गुहेदत की संतान है।

☛ **राजपूतों की उत्पत्ति वत्स गौत्र ब्राह्मण से हुई। यह कौनसे शिलालेख में है–**

(1) भाब्रू शिलालेख (2) घटियाला शिलालेख
(3) घोसुंडी-शिलालेख (4) बिजौलिया शिलालेख (4)

व्याख्या–राजपूतों के ब्राह्मण वंशी होने के साक्ष्य के रूप में डॉ. डी.आर. भण्डारकर बिजौलिया शिलालेख का उल्लेख करते हैं, जिसमें वासुदेव चौहान के उत्तराधिकारी सामंत को वत्स गोत्रीय ब्राह्मण होना बताया गया।

☛ **''किस इतिहासकार ने 7वीं सदी से 12वीं सदी तक के युग को राजपूत काल कहा'' था?**

(1) विंसेट स्मिथ (2) डॉ. जी.एच. ओझा
(3) के.सी. श्रीवास्तव (4) डॉ. डी.आर. भण्डारकर(1)

☛ **निम्नलिखित में से किसने राजपूतों की उत्पत्ति विदेशी जातियों से बताई?**

(1) नयन चन्द्र सूरी (2) कर्नल टॉड
(3) जयानक (4) चन्द्रशेखर (2)

व्याख्या–राजस्थान के इतिहास लेखक जेम्स टॉड ने लिखा कि ''राजपूत शक अथवा सीथियन जाति के वंशज हैं।'' टॉड ने अग्निकुण्ड की कहानी को स्वीकार करते हुए इसी आधार पर राजपूतों को विदेशी जाति का प्रमाणित करने का प्रयास किया है। उनका मत है कि यह विदेशी जातियाँ छठी शताब्दी के लगभग आक्रमणकारी के रूप में भारत आयीं और इन्ही विदेशी विजेताओं को जब वे शासक बन बैठे तो उन्हें अग्नि संस्कार द्वारा पवित्र कर वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत क्षत्रिय वर्ण में लिया है।

परीक्षा दृष्टि

★ राजपूत तथा मराठों के विरूद्ध हुरड़ा नाम स्थान पर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, उक्त सम्मेलन का आयोजन किस वर्ष किया गया था– **– 1734 ई. में**

★ किस राजपूत राजा ने हरिनाम, सुन्दरदास एवं जगन्नाथ जैसे विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था **– आमेर के राजा मानसिंह**

★ उन दो सरदारों के नाम बतायें, जिन्हें अकबर के समय 7000 की मनसबदारी प्रदान की गयी थी **– राजा मानसिंह, कोका अजीज**

★ किस राजपूत मनसबदार को अकबर ने 'फर्जन्द' की उपाधि प्रदान की– **– मानसिंह**

★ ब्रिटिश साम्राज्य के किस सदस्य के स्वागत में, जयपुर शहर को 1876 में गुलाबी रंग से रंगवाया गया था **– प्रिन्स अल्बर्ट**

★ कौनसा राजपूत शासक था जिसने सर्वप्रथम मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार की? **– भारमल**

★ किसे जयपुर शहर को गुलाबी रंग करवाने का श्रेय दिया जाता है– **– महाराजा रामसिंह द्वितीय**

★ सवाई जयसिंह के राजकवि जिसने 'राम रासा' की रचना की थी, थे– **– श्रीकृष्ण भट्ट कवि कलानिधि**

★ 1733 ई. में 'जीज मुहम्मद शाही' पुस्तक जो नक्षत्रों संबंधी ज्ञान से संबंधित है, के लेखक हैं? **– जयपुर के सवाई जयसिंह**

★ किस राजा के दरबार में विभिन्न विषयों की 'बाईसी-22' की भरमार थी– **– महाराजा प्रतापसिंह**

☛ **राजपूतों को हूणों की संतान किसने माना है?**

(1) वी. ए. स्मिथ
(2) जेम्स टॉड
(3) डॉ. गोपीनाथ शर्मा
(4) डॉ. डी.आर. भण्डारकर (1)

☛ **उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ व उसके आस-पास का क्षेत्र कहलाता है?**

(1) मारवाड़ (2) मेवाड़
(3) हाड़ौती (4) गोड़वाड़ (2)

व्याख्या–उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ तथा इनके आस-पास का क्षेत्र मेवाड़ कहलाता था।

- गुहिल वंश ने मुख्यत: मेवाड़ में शासन किया।
- इस वंश का नामकरण इस वंश के प्रतापी शासक 'गुहिल' के नाम से हुआ।
- मेवाड़ इलाके को मेदपाट व प्राग्वाट के नाम से भी जाना जाता है।

☛ **गुहिलों का ब्राह्मण होने का मत किसने प्रतिपादित किया?**

(1) अबुल फजल व कर्नल टॉड
(2) मुहणौत नैणसी व गोपीनाथ शर्मा
(3) जी.पी. ओझा व स्मिथ
(4) डॉ. दशरथ शर्मा व डॉ. डी.आर. भण्डारकर (2)

व्याख्या–अबुल फजल गुहिलों को ईरान के शासक नौशेखां से संबंधित करता है, तो कर्नल टॉड इन्हें वल्लभी के शासकों से संबंधित मानता है। डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा का मानना है कि 566 ई. के लगभग गुहिल ने अपना शासन स्थापित किया।

- गुहिल के बाद मेवाड़ को प्रतापी शासक बप्पा रावल हुआ।

☛ **बप्पा रावल के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन असत्य है–**

(1) 'राज प्रशस्ति' के अनुसार बप्पा ने 734 ई. में चित्तौड़ के शासक मानमोरी को परास्त कर चित्तौड़ पर अधिकार किया।
(2) बप्पा ने कैलाशपुरी में एकलिंग जी (लकुलीश) मंदिर का निर्माण करवाया।
(3) बप्पा की राजधानी नागदा थी।
(4) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है। (4)

व्याख्या–गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार बप्पा का वास्तविक नाम कालभोज था। बप्पा कालभोज की उपाधि थी।

- बप्पा रावल ने कैलाशपुरी में एकलिंग जी मंदिर का निर्माण करवाया। एकलिंग जी गुहिल वंश के कुलदेवता थे।
- वीर विनोद के रचनाकार कविराजा श्यामलदास ने लिखा कि बप्पा किसी राजा का नाम नहीं अपितु खिताब था।
- सी.वी. वैद्य ने बप्पा रावल की तुलना चार्ल्स मार्टेल (फ्रांसीसी सेनापति, जिसने यूरोप में सर्वप्रथम मुसलमानों को परास्त किया था।) से करते हैं।
- रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल व कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया।
- हिन्दू सूर्य, राजगुरु व चक्कवै बप्पा रावल की उपाधियाँ थी।

☛ **भुताला का युद्ध कब हुआ?**

(1) 1227 ई. (2) 1245 ई.
(3) 1301 ई. (4) 1300 ई. (1)

व्याख्या–इल्तुतमिश व जैत्रसिंह के बीच में।

- हमीर मदमर्दन पुस्तक में वर्णन मिलता है।
- जैत्रसिंह ने परमारों से चित्तौड़ छीनकर उसे अपनी राजधानी बनाया व 1227 ई. में 'भूताला के युद्ध' में दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तान इल्तुतमिश की सेना को परास्त किया, जिसका वर्णन जयसिंह सूरी के ग्रंथ हम्मीर मदमर्दन में मिलता है। इस ग्रंथ में इल्तुतमिश को हम्मीर कहा गया है।

☛ **"दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तानों के समय में मेवाड़ के राजाओं में सबसे प्रतापी और बलवान राजा जैत्रसिंह ही हुआ, जिसकी वीरता की प्रशंसा उसके विरोधियों ने भी की है।" जैत्रसिंह की प्रशंसा में उक्त कथन किसने कहा–**

(1) कविराजा श्यामलदास (2) डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(3) गोपीनाथ शर्मा (4) मुहणौत नैणसी (2)

व्याख्या–जैत्रसिंह का शासनकाल 1213-1253 ई. तक था। बालक व मदन जैत्रसिंह के सेनापति थे।

- डॉ. दशरथ शर्मा ने जैत्रसिंह के काल को 'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल' माना। व जैत्रसिंह को 'मेवाड़ की नवशक्ति का संचारक' माना।

☛ **1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण करने के प्रमुख कारण क्या थे?**

(1) अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा
(2) चित्तौड़ की सैनिक व व्यापारिक उपयोगिता
(3) अलाउद्दीन खिलजी द्वारा पद्मिनी को प्राप्त करने की चाह
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–1540 ई. में मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा लिखित पद्मावत में अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ आक्रमण का कारण रावत रतनसिंह की पत्नी रानी पद्मिनी को प्राप्त करना बतलाया। डॉ. दशरथ शर्मा इस मत को मान्यता प्रदान करते हैं।

☛ **अलाउद्दीन खिलजी ने रावल रतनसिंह पर आक्रमण कब किया?**

(1) 1311 ई. में (2) 1301 ई. में
(3) 1303 ई. में (4) 1306 ई. में (3)

व्याख्या–रतन सिंह के सेनापति–गोरा बादल, पत्नी–पद्मिनी (पद्मिनी)

- चित्तौड़ का नाम बदलकर "खिजराबाद" रखा।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. में चित्तौड़ पर आक्रमण किया। अलाउद्दीन की सेना से लड़ते हुए रतनसिंह व उसके सेनापति गोरा और बादल वीर गति को प्राप्त हुए तथा रानी पद्मिनी ने 1600 महिलाओं के साथ जौहर कर लिया।
- इस युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी का समकालीन इतिहासकार अमीर खुसरो भी सम्मिलित हुआ था। उसने 'खजाइन-उल-फुतूह' में इस आक्रमण का वर्णन किया है।
- अलाउद्दीन ने अपने पुत्र खिज्रखाँ को चित्तौड़ का प्रशासक नियुक्त कर चित्तौड़ का नाम खिज्राबाद कर दिया।
- रतनसिंह मेवाड़ के गुहिल वंश की रावल शाखा का अंतिम शासक था।

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF